Peace शांति

The advocates of peace face many questions:

- What exactly is peace? And, why is it so fragile in today's world?
- What can be done to establish peace?
- Can we use violence to establish peace?
- What are the main reasons for the growing violence in our society?

These are questions that we will examine in greater detail in this chapter.

शांति के समर्थकों को कई सवालों का सामना करना पड़ता है–

- वस्तुतः शांति का अर्थ क्या है? और, आज की दुनिया में यह इतनी कमजोर क्यों है?
- शांति स्थापित करने के लिए क्या किया जा सकता है?
- क्या शांति स्थापित करने के लिए हम हिंसा का उपयोग कर सकते हैं?
- हमारे समाज में हिंसा बढ़न के प्रमुख कारण क्या हैं?

इस अध्याय में हम इन्हीं कुछ सवालों की विस्तार से जाँच–पड़ताल करेंगे।

Peace शांति

THE MEANING OF PEACE

Peace is often defined as the absence of war. The definition is simple but misleading.

शांति का अर्थ

शांति की परिभाषा अक्सर युद्ध की अनुपस्थिति के रूप में की जाती है। यह परिभाषा सरल तो है पर भ्रामक भी है।

Peace शांति

The second step in defining peace would be to see it as absence of violent conflict of all kinds including war, riot, massacre, assassination, or simply physical attack. This definition is clearly better than the earlier one. Yet, it does not take us very far. Violence is often rooted in the very structure of society. Social institutions and practices that reinforce entrenched inequalities of caste,

शांति की परिभाषा करने में दूसरा कदम होगा इसे युद्ध, दंगा, नरसंहार, कत्ल या सामान्य शारीरिक प्रहार समेत सभी प्रकार के हिंसक संघर्षों के अभाव के रूप में देखना। यह परिभाषा स्पष्ट ही पहली से बेहतर है। लेकिन यह भी हमें बहुत दूर नहीं ले जा पाती है। हिंसा प्राय: समाज की मूल संरचना में ही रची–बसी है। एसी सामाजिक संस्थाएँ और प्रथाएँ जो जाति, वर्ग या लिंग के आधार पर असमानता की खाइयों को और गहरा करती है किसी की क्षति सूक्ष्म और अप्रकट तरीके से भी कर सकती हैं।

Peace शांति

class and gender, can also cause injury in subtle and invisible ways. If any challenge is made to these hierarchies by oppressed classes it may also breed conflict and violence. 'Structural violence' of this kind may produce large-scale evil consequences. Let us look at a few concrete instances of such violence arising from caste hierarchy, class disparity, patriarchy, colonialism, and racism/communalism.

जाति, वर्ग या लिंग पर आधारित इस स्तरीकरण को अगर शोषित वर्गों की ओर से कोई भी चुनौती मिलती है तो इससे भी संघर्ष और हिंसा पैदा हो सकती है। इस तरह की 'संरचनात्मक हिंसा' के बड़े पैमाने पर दुष्परिणाम हो सकते हैं। हम वैसी हिंसा से उत्पन्न कुछ ठोस उदाहरणों की ओर देखें – जैसे जातिभेद, वर्गभेद, पितृसत्ता, उपनिवेशवाद, नस्लवाद और सांप्रदायिकता।

Peace शांति

Eliminating Violence

The Constitution of the United Nations Educational, Scientific and Cultural Organisation rightly observes: “Since wars begin in the minds of men, it is in the minds of men that the defences of peace must be constructed”. Several age-old spiritual principles (e.g., compassion) and practices (e.g., meditation) are geared precisely to the facilitation of such an endeavour. Modern healing techniques and therapies like psychoanalysis can perform a similar function.

हिंसा की समाप्ति

संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनिसेफ) के संविधान ने उचित ही टिप्पणी की है कि, “चूँकि युद्ध का आरंभ लोगों के दिमाग में होता है, इसलिए शांति के बचाव भी लोगों के दिमाग में ही रचे जाने चाहिए।” इस तरह के प्रयास के लिए करुणा जैसे अनेक पुरातन आध्यात्मिक सिद्धांत और ध्यान जैसे अभ्यास बिल्कुल उपयुक्त हैं। आधुनिक नीरोगकारी तकनीक और मनोविश्लेषण जैसी चिकित्सा पद्धतियां भी यह काम कर सकती हैं।

Peace शांति

However, we have noted that violence does not originate merely within the individual psyche; it is also rooted in certain social structures. The elimination of structural violence necessitates the creation of a just and democratic society. Peace, understood as the harmonious coexistence of contented people, would be a product of such a society. It can never be achieved once and for all. Peace is not an end-state, but a process involving an active pursuit of the moral and material resources needed to establish human welfare in the broadest sense of the term.

हमने गौर किया है कि हिंसा का आरंभ महज किसी व्यक्ति के दिमाग में नहीं होता; इसकी जड़ें कतिपय सामाजिक संरचनाओं में भी होती हैं। न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक समाज की रचना संरचनात्मक हिंसा को निर्मूल करने के लिए अनिवार्य है। शांति, जिसे संतुष्ट लोगों के समरस सह–अस्तित्व के रूप में समझा जाता है, एसे ही समाज की उपज हो सकती है। शांति एकबार में हमेशा के लिए हासिल नहीं की जा सकती है। शांति कोई अंतिम स्थिति नहीं बल्कि एसी प्रक्रिया है, जिसमें व्यापकतम अर्थों में मानव कल्याण की स्थापना के लिए ज़रूरी नैतिक और भौतिक संसाधनों के सक्रिय क्रियाकलाप शामिल होते हैं।

Peace शांति

CAN VIOLENCE EVER PROMOTE PEACE?

It has often been asserted that violence — though it is an evil — can sometimes be a necessary prelude to bringing about peace. It may beargued that tyrants and oppressors can be prevented from continuing to harm the populace only by being forcibly removed. Or the liberation struggles of oppressed people can be justified even though they may use some violence. But resort to violence, however well meaning, could turn out to be self-defeating. Once deployed, it tends to spin out of control, leaving behind a trail of death and destruction.

क्या हिंसा कभी शांति को प्रोत्साहित कर सकती है?

अक्सर यह दावा किया जाता है कि हिंसा एक बुराई है लेकिन कभी–कभी यह शांति लाने की अपरिहार्य पूर्वशर्त जैसी होती है। यह तर्क दिया जा सकता है कि तानाशाहों और उत्पीड़कों को जबरन हटाकर ही उनको, जनता को निरंतर नुकसान पहुँचाने से रोका जा सकता है। या फिर, उत्पीड़ित लोगों के मुक्ति–संघर्षों को हिंसा के कुछ इस्तेमाल के बावजूद न्यायपूर्ण ठहराया जा सकता है। लेकिन अच्छे मकसद से भी हिंसा का सहारा लेना आत्मघाती हो सकता है। एक बार शुरू हो जाने पर इसकी प्रवृत्ति नियंत्रण से बाहर हो जाने की होती है और इसके कारण यह अपने पीछे मौत और बर्बादी की एक शृंखला छोड जाती है।

Peace शांति

It is for this reason that pacifists, who consider peace to be a supreme value, take a moral stand against the use of violence even for attaining just ends. They too recognise the need to fight oppression. However, they advocate the mobilisation of love and truth to win the hearts and minds of the oppressors. This is not to underestimate the potential of militant but non-violent form of resistance. Civil disobedience is a major mode of such struggle and it has been successfully used to make a dent in structures of oppression; a prominent instance being Gandhi's deployment of satyagraha during the Indian Freedom Movement. Gandhi took his stand on justice and appealed to the conscience of the British rulers. If that did not work, he put moral and political pressure on them by launching a mass movement involving open but non-violent breaking of the unjust laws. Drawinginspiration from him, Martin Luther King waged a similar battle in the 1960s against anti-Black racial discrimination in the USA.

Peace शांति

शांतिवादी का मकसद लड़ाकुओं की क्षमता को कम करके आंकना नहीं, प्रतिरोध के अहिंसक स्वरूप पर बल देना है। वैसे संघर्षों का एक प्रमुख तरीका सविनय अवज्ञा है और उत्पीड़न की संरचना की नींव हिलाने में इसका सफलतापूर्वक इस्तेमाल होता रहा है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गांधी जी द्वारा सत्याग्रह का प्रयोग एक प्रमुख उदाहरण है। गांधी जी ने न्याय को अपना आधार बनाया और विलायती शासकों के अंत:करण को आवाज़ दी। जब उससे काम नहीं चला तो उन पर नैतिक और राजनैतिक दबाव बनाने के लिए उन्होंने जनांदोलन आरंभ किया, जिसमें अनुचित कानूनों को अहिंसक ढंग से खुलेआम तोड़ना शामिल था। उनसे प्रेरणा लेकर मार्टिन लूथर किंग ने अमेरिका में काले लोगों के साथ भेदभाव के खिलाफ 1960 में इसी तरह का संघर्ष शुरू किया था।

Peace शांति

PEACE AND THE STATE

It is often argued that the division of world into separate sovereign states is an impediment to the pursuit of peace. As each state sees itself as an independent and supreme entity, it tends to protect its own perceived self-interest. While the pursuit of peace requires that we see ourselves as part of the larger humanity, states tend to make distinctions between people. To pursue the interest of their citizens they are willing to inflict injury upon others.

शांति और राज्यसत्ता

अक्सर तर्क दिया जाता है कि हर राज्य अपने को पूर्णतः स्वतंत्र और सर्वोच्च इकाई के रूप में देखता है। इससे अपने हितों को केवल अपने नजरिये से देखने और हर हालत में अपने हितों को बचाने और बढ़ान की प्रवृत्ति जन्म लेती है। शांति का अनुसरण करने के लिए ज़रूरी होता है कि हम स्वयं को वृहत्तर मानवता के एक हिस्से के रूप में देखें। लेकिन इससे अलग राज्यों में लोगों में फर्क करकेदेखने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है। अपने नागरिकों के हितों के नाम पर वे अक्सर बाकी लोगों को हानि पहुँचाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

Peace शांति

Besides, in today's world each state has consolidated instruments of coercion and force. While the state was expected to use its force, its army or its police, to protect its citizens, in practice these forces could be deployed against its own members to suppress dissent. This is most clearly evident in authoritarian regimes and military dictatorships, like the one currently ruling Myanmar.

इसके अलावा आजकल हर राज्य ने बल प्रयोग के अपने उपकरणों को मज़बूत किया है। हालाँकि राज्य से अपेक्षा यह थी कि वह सेना या पुलिस का प्रयोग अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए करेगा लेकिन व्यवहार में इन शक्तियों का प्रयोग अपने ही नागरिकों के विरोध के स्वर को दबाने के लिए किया जा सकता है। विश्व अलग–अलग संप्रभु राष्ट्रों में विभाजित है। इससे शांति के रास्ते में अवरोध उत्पन्न होते हैं। यह निरंकुश शासन और म्यामांर जैसी सैनिक तानाशाही में सबसे अधिक स्पष्ट दिखता है।

Peace शांति

The long-term solution to such problems lies in making the state more accountable through meaningful democratisation and reining it in via an effective system ofcivil liberties. This is the route taken by the post-apartheid regime in South Africa, which is one of the prominent political success stories of recent years. The struggle for democracy and human rights is thus closely linked to the safeguarding of peace.

समस्याओं का दीर्घकालिक समाधान सार्थक लोकतंत्रीकरण और अधिक नागरिक आज़ादी की एक कारगर पद्धति में है। इसके माध्यम से राज्यसत्ता को ज्यादा जवाबदेहबनाया जा सकता है। रंगभेद के खात्मे के बाद दक्षिण अफ्रीका में यही तरीका अपनाया गया है, जो हाल के वर्षों में राजनीतिक सफलता का एक प्रमुख उदाहरण है। इस प्रकार लोकतंत्र एवं मानवाधिकारों के लिए संघर्ष और शांति के सुरक्षित बने रहने के बीच घनिष्ठ संबंध है।

Peace शांति

DIFFERENT APPROACHES TO THE PURSUIT OF PEACE

Different strategies have been used for the pursuit and maintenance of peace. These have been shaped by three distinct approaches. The first approach accords centrality to states, respects their sovereignty, and treats competition among them as a fact of life. Its main concern is with the proper management of this competition, and with the containment of possible conflict through inter-state arrangements like 'balance of power'. Such a balance is said to have prevailed in the nineteenth century when the major European countries fine-tuned their struggle for power by forming alliances that deterred potential aggressors and prevented the outbreak of a large-scale war.

Peace शांति

शांति कायम करने के विभिन्न तरीके

शांति स्थापित करने और बनाए रखने के लिए विभिन्न रणनीतियां अपनाई गई हैं। इन रणनीतियों को आकार देने में तीन प्रमुख दृष्टिकोणों ने मदद पहुँचाई है। पहला तरीका राष्ट्रों को केंद्रीय स्थान देता है, उनकी संप्रभुता का आदर करता है और उनके बीच प्रतिद्वंद्विता को जीवंत सत्य मानता है। उसकी मुख्य चिंता प्रतिंद्वद्विता के उपयुक्त प्रबंधन तथा संघर्ष की आशंका का शमन सत्ता–संतुलन की पारस्परिक व्यवस्था के माध्यम से करने की होती है। कहा जाता है कि वैसा एक संतुलन उन्नीसवीं सदी में प्रचलित था, जब प्रमुख यूरोपीय देशों ने संभावित आक्रमण को रोकने और बड़े पैमाने पर युद्ध से बचने के लिए अपने सत्ता–संघषों में गठबंधन बनाते हुए तालमेल किया।

Peace शांति

The second approach too grants the deep-rooted nature of interstate rivalry. But it stresses the positive presence and possibilities of interdependence. It underscores the growing social and economic cooperation among nations. Such cooperation is expected to temper state sovereignty and promote international understanding. Consequently global conflict would be reduced, leading to better prospects of peace. An example frequently cited by advocates of this approach is that of post-World War II Europe which secured durable peace by graduating from economic integration to political unification.

Peace शांति

दूसरा तरीका भी राष्ट्रों की गहराई तक जमी आपसी प्रतिद्वंद्विता की प्रकृति को स्वीकार करता है, लेकिन इसका जोर सकारात्मक उपस्थिति और परस्पर निर्भरता की संभावनाओं पर है। यह विभिन्न देशों के बीच विकासमान सामाजिक –आर्थिक सहयोग को रेखांकित करता है। अपेक्षा रहती है कि वैसे सहयोग राष्ट की संप्रभुता को नरम करेंगे और अंतर्राष्ट्रीय समझदारी को प्रोत्साहित करेंगे। परिणामस्वरूप वैश्विक संघर्ष कम होंगे, जिससे शांति की बेहतर संभावनाएँ बनेंगी। इस पद्धति के पैरोकारों द्वारा अक्सर दिया जाने वाला एक उदाहरण द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के यूरोप का है, जो आर्थिक एकीकरण से राजनीतिक एकीकरण की ओर बढ़ता गया है।

Peace शांति

Unlike the first two approaches, the third considers the state system to be a passing phase of human history. It envisages the emergence of a supra-national order and sees the fostering of a global community as the surest guarantee of peace. The seeds of such a community are found in the expanding interactions and coalitions across state boundaries that involve diverse non-governmental actors like multinational corporations and people's movements. The proponents of this approach argue that the ongoing process of globalisation is further eroding the already diminished primacy and sovereignty of the state, thereby creating conditions conducive to the establishment of world peace.

Peace शांति

पहली दो पद्धतियों से भिन्न तीसरी पद्धति राष्ट्र आधारित व्यवस्था को मानव इतिहास की समाप्तप्राय अवस्था मानती है। यह अधिराष्ट्रीय व्यवस्था का मनोचित्र बनाती है और वैश्विक समुदाय के अभ्युदय को शांति की विश्वसनीय गारंटी मानती है। वैसे समुदाय के बीज राष्ट्रों की सीमाओं के आरपार बढ़त आपसी अंत:क्रियाओं और संश्रयों में दिखते हैं जिसमें बहुराष्ट्रीय निगम और जनांदोलन जैसे विविध गैरसरकारी कर्त्ता शामिल हैं। इस तरीके के प्रस्तावक और समर्थक तर्क देते हैं कि वैश्वीकरण की चालू प्रक्रिया राष्ट्रों की पहले से ही घट गई प्रधानता और संप्रभुता को और अधिक क्षीण कर रही है, जिसके फलस्वरूप विश्व–शांति कायम होने की परिस्थिति तैयार हो रही है।

CONTEMPORARY CHALLENGES

समकालीन चुनौतियां